जनसंख्या के घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक

जनसंख्या घनत्व का अर्थ

जनसंख्या घनत्व का अर्थ

जनसंख्या के घनत्व का आशय किसी क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या की सघनूता से है। जनसंख्या के घनत्व को प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या के रूप में मापा जाता है। घनत्व ज्ञात करने के लिए किसी क्षेत्र की कुल जनसंख्या को उसके क्षेत्रफल से भाग दिया जाता है। घनत्व से जनसंख्या के किसी क्षेत्र में संकेन्द्रण की मात्रा का बोध होता है।

जनसंख्या के घनत्व तथा वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

जनसंख्या के घनत्व तथा वितरण पर निम्नलिखित भौगोलिक एवं अन्य कारकों का प्रभाव पड़ता है।

- *स्थिति*
- *जलवायु*
- *भू-रचना*
- *स्वच्छ जल की पूर्ति*
- *मिट्टियाँ*
- *खनिज पदार्थ*
- *शक्ति के संसाधन*
- *आर्थिक उन्नति की अवस्था*
- *तकनीकी प्रगति का स्तर*

- *सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक*
- *राजनीतिक कारक*
- *पर्यावरण की वांछनीयता*
- *अन्तर्राष्ट्रीय पारस्परिक निर्भरता*

1. स्थिति

किसी प्रदेश की स्थिति का प्रभाव उसके समीपवती देशों परिवहन, व्यापार तथा मानव-इतिहास पर पड़ता है। उदाहरण के लिए हिन्द महासागर में भारत की स्थिति केन्द्रीय होने के कारण मध्य-पूर्व के देशों तथा पूर्वी गोलार्द्ध के देशों के साथ समुद्री व्यापार की सुविधा रखने वाली है। विश्व की लगभग 75 प्रतिशत जनसंख्या तटीय भागों तथा उनकी सीमा-पेटियों में निवास करती है। भूमध्यसागरीय भागों में उसके चारों ओर प्राचीन काल से ही मानव-बस्तियों का विकास होता रहा है। यहाँ मछलियों की प्राप्ति, सम-जलवायु, समतल मैदानी भूमि आदि भौगोलिक विशेषताएँ हैं जिससे कृषि, उद्योग, परिवहन एवं मानूव-आवासों का तीव्र गति से विकास हुआ है। इसीलिए इन भागों में सघन जनसंख्या का संकेन्द्रण हुआ है।

2. जलवायु

सभी कारकों में जलवायु महत्त्वपूर्ण साधन है जो जनसंख्या को किसी स्थान पर बसने के लिए प्रेरित करती है। विश्व के सबसे घने बसे भाग मानसूनी प्रदेश तथा सम-शीतोष्ण जुलवायु के प्रदेश हैं। चीन, जापान, भारत, म्यॉमार, वियतनाम बाग्लादेश तथा पूर्वी-द्वीप समूह की जुलवायु मानसूनी है, जब कि पश्चमी यूरोप एवं संयुक्त राज्य को जलवायु सम-शीतोष्ण है; अत: इन देशों में सघन जनसंख्या का निवास हुआ है। इसके विपरीत जिन प्रदेशों की जलवायु उष्ण एवं शुष्क है, वहाँ बहुत ही कम जनसंख्या निवास करती है। उदाहरण के लिए, सहारा, कालाहारी, अटाकामा, अरब, थार एवं ऑस्ट्रेलियाई मरुस्थलों में जनसंख्या का घनत्व एक व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। अति उष्ण एवं आर्द्र पूरदेशों में भी जनसंख्या कम है; जैसे- अमेज़न बेसिन के पर्वतीय एवं पुठारी क्षेत्रों में।

मानव-आवास के लिए स्वस्थ अनुकूलतमं जलवायु वह है जिसमें ग्रीष्म ऋतु का अधिकतम औसत तापमान 18° सेग्रे से कम तथा शीत ऋतु के सबसे ठण्डे महीने का तापमान 3° सेग्रे से कम न हो। सामान्यतया 4°-21° सेग्रे तापमान के प्रदेश जनसंख्या के आवास के लिए सर्वाधिक अनुकूल माने जाते हैं। वर्षा की मात्रा में वृद्धि के साथ-साथ जनसंख्या के घनत्व मे भी वृद्धि होती जाती है तथा उसके घटने के साथ-साथ जनसंख्या घनत्व में कमी होती जाती है।

3. भू-रचना

भू-रचना का जनसंख्या से गहरा सम्बन्ध है। समतल मैदानी भागों में कृषि, सिंचाई, परिवहन, व्यापार आदि का विकास अधिक होता है; अत: मैदानी क्षेत्र सघन रूप से बस् जाते हैं। पर्वतीय एवं पहाड़ी क्षेत्रो में कष्टदायक एवं विषम भूमि की बनावट होने के कारण बहुत कम लोग निवास करना पसन्द करते हैं। भारत के असोम राज्य में केवल 340 मानव प्रति वर्ग किमी निवास करते हैं, जब कि गंगा के डेल्टा में 800 से भी अधिक व्यक्ति प्रति वर्ग किमी निवास कर रहे हैं।

4. स्वच्छ जल की पूर्ति

जल मानव की मूल आवश्यकता है। जल की आवश्यकता मुख्यत: निम्नलिखित तीन प्रकार की है।

(i) घरेलू आवश्यकताओं के लिए जल की पूर्ति,

(ii) औद्योगिक कार्यों के लिए जल की पूर्ति एवं

(iii) सिंचाई के लिए जल की पूर्ति।

अतः जिन प्रदेशों एवं क्षेत्रों में शुद्ध एवं स्वच्छ मीठे जल की पूर्ति की सुविधा होती है, वहाँ जनसंख्या भी अधिक निवास करने लगती है; जैसे-नदी-घाटियों एवं समुद्रतटीय क्षेत्रों में।

5. मिट्टियाँ

जनसंख्या का मूल आधार भोजन है जिसके बिना वह जीवित नहीं रह सकती। शाकाहारी भोजन प्रत्यक्ष रूप से एवं मांसाहारी भोजन अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी में ही उत्पन्न होते हैं। जिन प्रदेशों की मिट्टियाँ उपजाऊ होती हैं, वहाँ सघन जनसंख्या निवास करती है। चीन, भारत एवं यूरोपीय देशों में नदियों की घाटियों में मिट्टी की अधिक उर्वरा शक्ति के कारण संघन जनसंख्या निवास कर रही है।

6. खनिज पदार्थ

जिन प्रदेशों में खनिज पदार्थों का बाहुल्य होता है, वहाँ उद्योगों के विकसित होने की पर्याप्त सम्भावनाएँ रहती है। इस कारण ये क्षेत्र जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित करते हैं तथा विषम पॉरिंस्थितियों में भी इन प्रदेशों में सघन जनसंख्या का आवास रहता है। यूरोप महाद्वीप के सघन बसे प्रदेश कोयले एवं लोहे की खानों के समीप ही स्थित मिलते हैं। इसी प्रकार रूस के उन क्षेत्रों में जनसंख्या अधिक है, जहाँ खनिज भण्डार अधिक हैं।

7. शक्ति के संसाधन

उद्योगों एवं परिवहन के साधनों के संचालन में कोयला, पेट्रोलियम, जल-विद्युत एवं प्राकृतिक गैस की आवश्यकता होती है तथा इनकी प्राप्ति वाले क्षेत्रों में जनसंख्या भी सघन रूप में निवास करने लगती है।

8. आर्थिक उन्नति की अवस्था

किसी प्रदेश की आर्थिक स्थिति में वृद्धि होने पर उसकी जनसंख्या-पोषण की क्षमता में भी वृद्धि हो जाती है। अत: इन प्रदेशों में जनसंख्या भी अधिक निवास करने लग जाती है। कृषि उत्पादन कम होने पर भी इन प्रदेशों में खाद्यान्न विदेशों से आयात कर लिये जाते हैं, क्योंकि आयात करने के लिए उनकी आर्थिक स्थिति अनुकूल होती है।

9. तकनीकी प्रगति का स्तर

तकनीकी विकास के द्वारा नवीन यन्त्रों, उपकरणों एवं मशीनों के उत्पादन में वृद्धि होती है जिससे विभिन्न क्षेत्रों के उत्पादों में भी वृद्धि होती है एवं ऋतु तथा जलवायु की विषमताओं पर नियन्त्रण कर लिया जाता है। इन सुविधाओं के स्तर में वृद्धि से जनसंख्या में भी वृद्धि हो जाती है। यूरोप के औद्योगिक प्रदेशों में 700 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से भी अधिक जन-घनत्व इसी कारण मिलता है।

10. सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक

सामाजिक रीति-रिवाजों, धार्मिक विश्वासों एवं जीवन के प्रति दृष्टिकोण का प्रभाव जनसंख्या वितरण पर भी पड़ता है। जिस समाज में लोग भाग्यवादी होते हैं, उनमें परिवार-कल्याण कार्यक्रमों के प्रति विश्वास एवं रुचि न होने के कारण अधिक सन्तति से जनसंख्या में वृद्धि होती चली जाती है। उदाहरण के लिए, भारत में मुस्लिम लोगों का परिवार-कल्याण के प्रति धार्मिक विश्वास न होने के कारण उनकी जनसंख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है।

11. राजनीतिक कारक

राजनीतिक नियमों का प्रभाव भी जनसंख्या वितरण पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। उदाहरणार्थ, ऑस्ट्रेलिया का क्षेत्रफल भारत की अपेक्षा लगभग तीन गुना अधिक है, जब कि ऑस्ट्रेलिया की जनसंख्या भारत की जनसंख्या का केवल 1/50 भाग ही है। इसका प्रमुख कारण ऑस्ट्रेलिया सरकार की श्वेत नीति (White Policy) है जो गौरी जातियों के अतिरिक्त दूसरी नस्ल के लोगों को ऑस्ट्रेलिया में बसने से रोकती है।

12. पर्यावरण की वांछनीयता

मानवीय सभ्यता के विकास के साथ-साथ परिवहन, संचार आदि साधनों में वृद्धि से विभिन्न प्रदेशों की वांछनीयता में भी परिवर्तन हो जाते हैं। जहाँ आर्थिक विकास की सम्भावनाएँ अत्यधिक दिखाई पड़ती हैं, उन क्षेत्रों में मानव के बसने की इच्छा भी अधिक रहती है। उदाहरणार्थ, बिहार राज्य के उत्तरी भाग में कृषि द्वारा संघन जनसंख्या पोषण करने की क्षमता विद्यमान है और दक्षिण की ओर छोटा नागपुर पठार में खनिज पदार्थों के कारण औद्योगिक विकास की भारी क्षमता है। अत: बिहार राज्य में इन सम्भावनाओं के कारण जनसंख्या भी सघन होती जा रही है। इसके विपरीत्र सम्भावनाओं की कमी के कारण हिमालय के तराई प्रदेश में जनसंख्या विरल है।

13. अन्तर्राष्ट्रीय पारस्परिक निर्भरता

वर्तमान समय में विशेषी-करण में वृद्धि के फलस्वरूप सभ्य राष्ट्र अपनी खाद्यान्न आवश्यकता के लिए एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन तथा जर्मनी के खाद्यान्न अधिकतर ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, अर्जेण्टाइना आदि देशों से मशीनों के बदले आते हैं; अर्थात् एक देश दूसरे देश की उपज को आसानी से बदल सकता है। इससे विशेषीकरण में वृद्धि होती है तथा अधिक जनसंख्या का पोषण सम्भव हो सकता है। इसी प्रकार जापान ने भी सघन जनसंख्या के पोषण की क्षमता आसानी से प्राप्त कर ली है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार ने विभिन्न देशों की आर्थिक निर्भरता की अपेक्षा विशेषीकरण को प्रोत्साहन दिया है। अत: इसके लिए एक देश को दूसरे देश की विशेषताओं को उचित प्रकार से समझना चाहिए।

भूगोल

महत्वपूर्ण लिंक

- मिट्टियों का वर्गीकरण, वितरण एवं विशेषताएँ (Classification, distribution and characteristics of soils)
- ज्वालामुखी का मानव-जीवन पर प्रभाव- निर्माणकारी प्रभाव तथा विनाशकारी प्रभाव
- ज्वालामुखी का अर्थ और परिभाषा- उद्गार के कारण तथा ज्वालामुखी का विश्व वितरण
- Watershed Management - Concept, Approaches, Principles, Demarcation of Watershed Area, Watershed Management in India
- Contributions of Arab Geographers - Historical Background, Prominent Arab Scholars, Contribution to different branches of Geography
- शहरीय परिवहन- परिवहन और स्थान, परिवहन प्रणाली का महत्व एवं विकास, शहरीय परिवहन की समस्याएँ एवं समाधान
- शहरी बाढ़- कारण, श्रेणियाँ, खतरा, शहरी बाढ़ प्रबंधन (आपदा के दौरान और बाद में)
- द सेक्टर थ्योरी: होयट (1939) (The Sector Theory: Hoyt (1939))
- द मल्टीपल न्यूक्ली थ्योरी: हैरिस और उलमैन (The Multiple Nuclei Theory: Harris and Ullman (1945))
- द कन्सेन्ट्रिक जोन मॉडल: ई.डबल्यू.बर्गेस (1923) (The Concentric Zone Model: E.W. Burgess (1923))
- अनुप्रयुक्त जलवायु विज्ञान (Applied Climatology)- परिभाषा, अर्थ और महत्व, डेटा के स्रोत, जलवायु और प्राकृतिक प्रणाली, जलवायु और सामाजिक व्यवस्था, जलवायु और स्वास्थ्य, सारांश और निष्कर्ष

- प्राकृतिक आपदाएँ (Geomorphic Hazards)- भूकंप, सुनामी, भूस्खलन, हिमस्खलन
- हिमस्खलन- हिमस्खलन के प्रकार, एवलानचेस के कारक, हिमस्खलन आपदा, जोखिम में कमी
- भूस्खलन- भूस्खलन के प्रकार, भूस्खलन के कारण, भूस्खलन आपदा, जोखिम में कमी के उपाय
- सुनामी- सुनामी के कारण, खतरे, सुनामी का प्रसार एवं तंत्र, जोखिम में कमी
- Sources of Groundwater- Connate water, Meteoric water, Juvenile water, Condensational water
- भूकंप- भूकंप के कारण, भूकंपों का वैश्विक वितरण, भूकंप के खतरे, भूकंप की भविष्यवाणी और जोखिम में कमी
- Sources of Groundwater- Connate water, Meteoric water, Juvenile water, Condensational water
- Environmental Pollution- Definitions, Pollutant, Classification of pollutants, Types of Pollution
- Flood- Causes of Flood, Types of Floods, Impacts (Problems) of Flooding, Precautionary Steps before Flood, Steps to be taken during and post flood, Flood Preventive Measures
- Drought and its Causes, Types of Droughts, Impact (Problems) of Drought, Drought Mitigation and Management
- आपदा और आपदा प्रबंधन- आपदा प्रबंधन चक्र, भारत में आपदा प्रबंधन का इतिहास, भारत में आपदा प्रबंधन में शामिल एजेंसियां
- सूखा- कारण, सूखे के प्रकार, सूखे का प्रभाव (समस्याएँ), शमन और प्रबंधन
- बाढ़- बाढ़ का कारण, क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा, बाढ़ के प्रभाव (समस्याएँ), बाढ़ से पहले के एहतियाती कदम, बाढ़ के दौरान और बाद में उठाए जाने वाले कदम, बाढ़ निवारक उपाय
- प्रमुख पर्यावरण नीतियां और कार्यक्रम – गंगा एक्शन प्लान, टाइगर प्रोजेक्ट, ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल, पर्यावरणीय कानून
- मृदा क्षरण - प्रभावित करने वाले कारक, अपरदन के प्रकार, कटाव का प्रभाव, रोकथाम
- पर्यावरणीय आंदोलन – संकल्पना, आंदोलनों की उत्पत्ति, उद्भव के प्रमुख आधार, भारत में मुख्य पर्यावरणीय आंदोलन
- नर्मदा बचाओ आंदोलन 1985 - वर्ष, स्थान, लीडर्स, उद्देश्य तथा सम्पूर्ण जानकारी
- मिट्टी के कटाव को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक
- मृदा अपरदन का प्रभाव - मृदा अपरदन के प्रभावों में शामिल हैं.....
- साइलेंट वैली मूवमेंट - वर्ष, स्थान, लीडर्स, उद्देश्य तथा सम्पूर्ण जानकारी
- जल प्रदूषण- स्रोत, प्रभाव, रोकने के लिए नियंत्रण के उपाय
- विकिरण (रेडिएशन) प्रदूषण- प्रभाव, निवारक तथा उपाय
- ध्वनि प्रदूषण- स्रोत, प्रभाव, निवारक तथा उपाय
- थर्मल प्रदूषण- थर्मल प्रदूषण ऊर्जा अपव्यय के माध्यम से ठंडा पानी में अपशिष्ट .....
- भूमि प्रदूषण- स्रोत, कारण, रोकने के लिए नियंत्रण के उपाय
- पर्यावरण प्रदूषण- परिभाषाएँ, प्रदूषक, प्रदूषकों का वर्गीकरण, प्रदूषण के प्रकार, निष्कर्ष
- वायु प्रदूषण- स्रोत, प्रभाव, वायु प्रदूषण के लिए नियंत्रण
- वायु दाब- प्रभावित करने वाले कारक,दबाव और पवन के बीच संबंध, दबाव बेल्ट में मौसमी बदलाव
- वायु दबाव- वायु दबाव बेल्ट का वितरण
- वायुमंडलीय दबाव को प्रभावित करने वाले कारक (तापमान, ऊंचाई, जल वाष्प, गुरुत्वाकर्षण बल, पृथ्वी का घूर्णन)
- अंडमान सागर से जुड़े सम्पूर्ण तथ्य एवं जानकारी
- बंगाल की खाड़ी से संबन्धित तथ्य एवं समुद्री जीवन
- अरब सागर, अरब सागर की विशेषताएं, उल्लेखनीय खाड़ी
- भारतीय महासागर- हिंद महासागर (क्षेत्रीय विस्तार, गहराई और मात्रा, खड़ियाँ और समुद्र, व्यापार मार्ग, लवणता, तल की रूपरेखा, समुद्री जीव, द्वीप)
- भूमि उपयोग - भूमि कवर, भूमि संसाधन, भूमि संसाधन का महत्व, मूल संबंध: भूमि, जनसंख्या और प्रबंधन रणनीति, भारत में लैंडयूज / लैंडकवर
- संसाधन भूगोल के सिद्धांत – परिभाषा, NEO-CLASSICAL थ्योरी, गतिशीलता के सिद्धांत
- संसाधन भूगोल की अवधारणा – परिचय, विश्वसनीय अवधारणा, सामग्री अवधारणा

- जल संसाधन भूगोल एवं जल संसाधन भूगोल की विषय वस्तु
- मानव संसाधन और मानव संसाधन के अध्ययन के तीन पहलू
- संसाधन भूगोल के प्रकार - प्राकृतिक संसाधन, मानव संसाधन
- प्राकृतिक संसाधन- प्राकृतिक संसाधनों के प्रकार
- संसाधनों का उपयोग एवं संसाधन भूगोल की प्रासंगिकता
- संसाधन भूगोल का परिचय | संसाधन भूगोल की वृद्धि | विशेषताएं | संसाधन का अर्थ | प्राकृतिक संसाधन अभिशाप सिद्धांत (ब्रिज, 2000)
- मानचित्र का अर्थ एवं परिभाषाएं (MEANING AND DEFINITION OF MAP)
- मानचित्र का अर्थ एवं मानचित्रों का महत्व (MEANING OF MAP AND IMPORTANCE OF MAPS)
- मानचित्रों का वर्गीकरण (CLASSIFICATION OF MAPS) मानचित्र के प्रकार
- मृदा नमी को प्रभावित करने वाले कारक(Factors Affecting Soil Moisture)
- मृदा नमी संरक्षण (Soil Moisture Conservation)
- भूमिगत जल को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Underground Water)
- भूमिगत जल के स्रोत (Sources of Ground Water)
- वाष्पोत्सर्जन को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Transpiration)
- मृदा नमी की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Importance of Soil Moisture)
- जलीय चक्र पर मानव का प्रभाव (Man's Influence on Hydrological Cycle)
- वाष्पीकरण को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Evaporation)
- वाष्पीकरण नियन्त्रण (Evaporation Control)
- वाष्पोत्सर्जन का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Transpiration)
- जल विज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning And Definition of Hydrology)
- जल विज्ञान का विषय क्षेत्र (Scope of Hydrology)
- भारतीय जलवायु की प्रमुख विशेषताएँ (SALIENT FEATURES)
- जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Climate)
- जलवायु परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन के कारण, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु वैश्विक प्रयास
- पारिस्थितिक तंत्र पर मानव का प्रभाव
- प्राकृतिक संसाधन (Natural resource)
- प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण
- चट्टानों के प्रकार - आग्नेय चट्टानें, अवसादी चट्टानें, रुपांतरित चट्टानें
- मनुष्य का विकास (Human evolution)
- जेट प्रवाह (Jet Streams)
- जनसंख्या वृद्धि रोकने के उपाय (EFFORTS TO CHECK POPULATION GROWTH)
- वनों के लाभ (Advantages of Forests)
- श्वेत क्रान्ति (White Revolution)
- द्वितीय हरित क्रांति
- हरित क्रान्ति की सफलता के लिए सुझाव (SUGGESTIONS FOR THE SUCCESS OF GREEN REVOLUTION)
- हरित क्रांति के दोष अथवा समस्याएं (Demerits or Problems of Green Revolution)
- हरित क्रान्ति की उपलब्धियां एवं विशेषताएं
- हरित क्रान्ति (Green Revolution)
- शहरीय परिवहन | यातायात में व्यवधान सिद्धांत | परिवहन की समस्याएं एवं समाधान
- तकनीकी आपदा Technical Hazard
- ओजोन क्षरण Ozone layer degradation
- Soil Resource Degradation (Soil Erosion)
- मानव विकास Human Development in hindi
- गैर पारंपरिक ऊर्जा के स्रोत (non conventional energy resources)
- संज्ञानात्मक नक्शा, मानसिक नक्शा या मानसिक मॉडल Cognitive Map

- गतिक संतुलन संकल्पना Dynamic Equilibrium concept
- पारंपरिक एवं लोक ग्रामीण अधिवास के प्रकार Traditional and folk rural house types
- रैवेनस्टीन का प्रवास नियम (Ravenstein – The laws of migration)
- भारतीय गृह की प्रादेशिक विशेषताएँ [Regional morphological characteristics of Indian village]
- नगरीय क्षेत्रीय माडल [Urban realms model]
- बाई लुंड का सिद्धांत [Bylund (Sweden) settlement diffusion theory]
- भूमण्डलीय ऊष्मन(Global Warming)|भूमंडलीय ऊष्मन द्वारा उत्पन्न समस्याएँ|भूमंडलीय ऊष्मन के कारक
- मानव अधिवास तंत्र [Human settlement as a system]
- बाढ़ आपदा परिभाषा तथा अर्थ,बाढ़ के प्रकार,बाढ़ के कारण,बाढ़ आपदा का प्रबन्धन,
- भूमंडलीकरण (वैश्वीकरण) विशेषताएँ,वैश्वीकरण के लाभ,पक्ष तथा विपक्ष में तर्क
- भारत में वनों का वर्गीकरण - भौगोलिक आधार पर वर्गीकरण
- यूनानी भूगोलवेत्ता (Greek Geographers in hindi)
- प्राचीन भारत के भूगोलवेत्ता (Geographers of Ancient India in hindi)
- रोमन भूगोलवेत्ता (Roman Geographers in hindi)
- अरब भूगोलवेत्ता (Arab Geographers in hindi)
- पुनर्जागरण काल के भूगोलवेत्ता (Geographers of Renaissance Period in hindi)
- पुनर्जागरण काल के प्रमुख खोजयात्री (Main Explorers of Renaissance Period in hindi)
- 18 वीं शताब्दी के जर्मन भूगोलवेत्ता (German geographers of 18th century)
- अलेक्जेण्डर वॉन हम्बोल्ट – आधुनिक भूगोल का जनक (Alexander Von Humboldt)
- कार्ल रिटर – आधुनिक भूगोल का संस्थापक (Carl Ritter Founder of modern geography)
- फ्रेडरिक रैटजेल - मानव भूगोल का जनक (Friedrich Ratzel - father of human geography)
- फर्डीनण्ड वॉन रिचथोफेन – जर्मन भूगोलवेदत्ता (Ferdinand Von Richthofen)
- अल्फ्रेड हेटनर – जर्मन भूगोलवेत्ता (Alfred Hettner - German geographer)
- वाइडल डी ला ब्लाश - फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता (Vidal de la Blache – French Gerographer)
- जीन ब्रूंश – फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता (Jean Brunhes – French Geographer)
- अल्बर्ट डिमांजियाँ - फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता (Albert Demangeon - French Geographer)
- इमैनुअल डी मार्तोन –फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता (Emmanuel De Martonne – French Geographer)
- ए० जे० हरबर्टसन – ब्रिटिश भूगोलवेत्ता (A. J. Herbertson – British Geographer)
- हाफोर्ड जॉन मैकिण्डर – ब्रिटिश भुगोलवेत्ता (Halford John Mackinder – British Geographers)
- पैट्रिक गेडिस – ब्रिटिश भुगोलावेत्ता (Patric Geddes – British Geographers)
- हरबर्ट जॉन फ्ल्यूर - ब्रिटिश भुगोलावेत्ता (Herbert John Fleure – British Geographers)
- लारेन्स डडले स्टाम्प - ब्रिटिश भुगोलावेत्ता (L. D. Stamp – British Geographers)
- विलियम मॉरिस डेविस - अमेरिकी भूगोलवेत्ता (William Morris Davis – American geographer)
- एलेन चर्चिल सेम्पल- अमेरिकी भूगोलवेत्ता (Ellen Churchill Semple - American geographer)
- एल्सवर्थ हंटिंगटन – अमेरिकी भूगोलवेत्ता (Ellsworth Huntington – American geographer)
- ईसा बोमैन – अमेरिकी भूगोलवेत्ता (Isaiah Bowman – American geographer)
- ग्रिफिथ टेलर -अमेरिकी भूगोलवेत्ता (Griffith Taylor -American geographer)
- कार्ल ऑस्कर सावर - अमेरिकी भूगोलवेत्ता (Carl O. Sauer – American geographer)
- रिचर्ड हार्टशोर्न – अमेरिकी भुगोलवेत्ता (Rechard Hartshorne – American geographer)